

ASHA ARCHIVE

સાન માર્કેટ
1.6/8

૨૩૬

પ્રિય વરુણ ચંદ્રકાંત પૂજ્ય વિદ્વાન

બ. રેવેન્ડા

પ. ૩૩૬

~~૨૩૬~~ ૫૬૫



पुनश्चन



[illegible]

* श्रीगणेशाय नमः ॥ १५ ॥ तं कुरु नृपुंसकं यथा गच्छति दृष्ट्वा त्रानेन तं ॥ कनिष्ठीं गुह्यं स्यात्तु यथा न च ॥

[illegible]

ମଧ୍ୟ

[illegible]

६२

॥ १५८ ॥ उक्ता यावत्स्य तत्प्राप्तो याऽभयार्थं यत्तु गते ॥ कृत्वा सस्य युयुक्त्वं यद्वा सूर्यादिदर्शनं ॥ १५९ ॥ अथ मूडाऽयवश्चामि सर्वतः शृंगुः प्रविता ॥ या रित्वि न चित्ता रिध्वमादं
तर्म उदवता ॥ १६० ॥ अथ नेत्रयकालवध्वने काश्च व कर्मणि ॥ खानवावाहनं ही खयतिष्ठायी वनक ॥ १६१ ॥ नेत्रयव तथा न्यतः कल्ययकाहिते ॥ ध्यान मूडाऽयवेंद्रां उ
खयाऽस्य खलु दलक्षिता ॥ १६२ ॥ आवाहनादिका मूडानवसा ध्यानमता ॥ तथा यत्तु मूडाऽयवेंद्रां यत्तु ॥ १६३ ॥ नृकानविंशति मूडा विष्णु नृकामनि
विशि ॥ ही खेवकु गदायद्भवेंद्रां वत्सकोरुता ॥ १६४ ॥ वनमाला तथा ध्यान मूडा विष्णु क्रया तथा ॥ वाह मूडा यनेऽयनं ध्यानमाह निका तथा ॥ १६५ ॥ गनुता तथा मूडा
विष्णुऽस्य गावद्विनी ॥ नानसिंदववादी हयगी वीधनसुता ॥ १६६ ॥ काम मूडाऽसमाख्याता हितवेंद्रां दल मूडिका ॥ लिं गयो निरिधुलं दमाले द्यारी मृगालिका ॥ १६७ ॥
खर्वां भवेकया लाख्या उमनूऽहितता यदा ॥ सूर्यसे के वद्वेदा स्या सफ मूडा ग (ह) निरु ॥ १६८ ॥ दंतयाही कृष्ण विद्याय धूलयु संक्रुका ॥ वीजयुना क्रया मूडा विष्णुयाऽहं कि
यूजन ॥ १६९ ॥ योर्ध्व कृष्णवनाही निखयु वर्मधनूऽहना ॥ मोहली मूडिका दो (ग) मूडाऽहं कृष्णयि र्यका ॥ १७० ॥ लक्ष्मी मूडा चने लक्ष्मीवाग्धा दि न्यास यूजन ॥ अक्रमाला
तथा वीधवा स्या युक्त क मूडिका ॥ १७१ ॥ सफ जिह्वा क्रया मूडा विष्णुया वक्रियूजन ॥ द (ह) मा मूडिका क्रया क्रियुना पाय यूजन ॥ १७२ ॥ संमंजिंद्रां क्रयां मूडां विष्णुयां वक्रि
संक्षारदा वधक र्यो व (ह) मा दामहां कृष्ण ॥ खयनी वीजया न्या स्या रिखं उऽयनिका हिता ॥ १७३ ॥ कुरु मूडा रिध्या स्या त्वा मूडा तथा सन ॥ कालक र्मा ययाः

लक्ष्मिनि॥ याऽं कृष्णवनाशिनी धनर्वोद॥ २४१॥ कनिष्ठा मितं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४२॥ वाम हस्तं
गन्धार्थं कृष्णं मुष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४३॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४४॥
याऽं नृगल मृदयं सर्वे विद्यु विनाशिनी॥ २४५॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४६॥ वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४७॥
मध्यमं दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४८॥ कनिष्ठा मितं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २४९॥
वीना मृदयं मायाता सनस्यता शिथिल कनी॥ वाम मूर्ध्नि मृदयं मायाता सनस्यता शिथिल कनी॥ २५०॥ दक्षिणां गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५१॥
मायास्थान मृदिका॥ २५२॥ वाम मृदयं सनस्यता शिथिल कनी॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५३॥
न॥ सफजिज्ञास्य मृदयं वेधन न पियं कनी॥ २५४॥ कनिष्ठां गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५५॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५६॥
खेयाय निवालिता॥ दक्षिणां गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५७॥ मायाता सनस्यता शिथिल कनी॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५८॥
काकेनी कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २५९॥ मूर्ध्नि कृष्णं वक्ष्म्यां युष्मन्नेव दक्षत॥ तिष्ठीं गुली वयस्य न संसृष्ट खड्ग मृदिका॥ २६०॥

यनस्य १ मिलि १

[illegible]

ॐ

विक्रयत ॥ ३०॥ यद्यप्युक्तं गृहीत्वा स्यात् अथादिन्यासपूर्वकं ॥ मन्त्रादि संस्मरणार्थं गत्वा साक्षात् कुरुते ॥ ३०॥ साक्षात् कुरुते मन्त्रं स्यात् अथादिन्यासपूर्वकं ॥ अथ
 छंदवर्गो तीर्थमावाक्यं तु लिख्यते ॥ ३१॥ अमृतीकृतं तर्हीर्थं मृदुयाधेनू संश्रया ॥ वमिह्यमृतवीजनं न कथं कुरुते न धवे ॥ ३१॥ गुरुते न ॥ मूर्तिं साक्षात् कुरुते
 न धवे ॥ तीर्थं निमग्नं त्रिद्वान्न न समं उमच्च न ॥ ३२॥ कृत्वा यमर्षं रूय उथायाव स्यात् ॥ यन्निधायकं मन्त्रं आचम्या कुर्यादियं कुरुते ॥ ३३॥ कृत्वा मन्त्रादि संस्म
 अथादिन्यासपूर्वकं ॥ उक्त्वा मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ३४॥ वेदमाधनं मन्त्रं धनं नेत्संस्मृतं धनं गतं ॥ यन्निधायकं मन्त्रं आचम्या कुर्यादियं कुरुते ॥ ३५॥
 गुरुदेवस्य गमयेति ज्ञेयं विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ३६॥ अथ दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ३७॥ अथ दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ३८॥
 कल्पमाचनं ॥ ३९॥ सिद्धिकामाश्च मन्त्रं स्यात् ॥ यत्संस्मृतं ज्ञेयं गते ॥ ४०॥ दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ४१॥ दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ४२॥
 धनेन सर्वं हि कनिष्ठयोः पुत्रं स्यात् ॥ ४३॥ के शो कुरुते ज्ञेयं न दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ४४॥ कुरुते ज्ञेयं न दत्तात्रेयस्य मूलमर्चयित्वा विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ४५॥
 मान्यायं गुरुत्वा ॥ अमुं यत्संस्मृतं धनं मन्त्रं स्यात् ॥ ४६॥ तीर्थं मन्त्रं धनं मावाक्यं तीर्थं सवित्रं मन्त्रं स्यात् ॥ ४७॥ तीर्थं मन्त्रं धनं मावाक्यं तीर्थं सवित्रं मन्त्रं स्यात् ॥ ४८॥
 धनं नृमूर्ध्नि वसमान्यायं मिदं कुरुते ॥ दानं मन्त्रं विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ४९॥ दानं मन्त्रं विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ५०॥ दानं मन्त्रं विष्णो नित्यमिदं गते ॥ ५१॥

सायंविद्युक्कय समन्यतः॥३२४॥तथा४याध्वगतगमयमूनयुषवानि॥३२५॥ध्वतानेवविध्वतानेवैवयध्वनिधीतथा॥३२६॥देवतामर्चयदस्युतिद्वानमिति
 क्रमात्॥ततस्तदवतायास्तुह्वानाधियान्युजतः॥३२७॥नदिसंज्ञामकैहोलाग॥३२८॥वृषत्सुधा॥हृदिनीतिस्तुथास्तुदमाव॥३२९॥वैकुण्ठेक
 दक्षामेहादनगजानेनो॥लंबादना॥धविकेटोविद्युनाजाकथा॥३३०॥धूमवस्त्रस्त्रिमयेवा॥३३१॥कस्यामातन४मता॥३३२॥वैकुण्ठेक
 तथा॥३३३॥वानाकननडासिवाभूषणसयमीतथा॥३३४॥मृदमीत्यामहालक्ष्मी४याकाविध्यस्यमातन४॥३३५॥गुण्डायमा॥३३६॥वैकुण्ठेक
 धयर्थमूलमर्थय०श्रिया॥३३७॥दिव्याकनिक्रहोमीध्वसर्वविद्यानिना॥३३८॥जिवाइयो॥३३९॥वैकुण्ठेक
 म॥३४०॥वैकुण्ठेक४युवि॥३४१॥दक्षिण॥३४२॥गोदादंष्ट्रमहाकायकल्याणददनायम॥३४३॥रोनवायनमस्तुमनूदीदामहं॥३४४॥गुण्डायमा
 स्त्रानवि॥३४५॥धयन॥निलिकमूलमर्थय०श्रिया॥३४६॥गोदादंष्ट्रमहाकायकल्याणददनायम॥३४७॥रोनवायनमस्तुमनूदीदामहं॥३४८॥गुण्डायमा
 कृष्णवासनध्वकैवेलाजिनक॥३४९॥वदिकायायविद्युत्सुधाकृत्यलिले॥३५०॥३३॥आध्वनादिपृथिव्यास्तुह्वानेयुषदवता॥३५१॥मनूयुषदविध्वद४युथि
 ४सूतलमर्त॥३५२॥देवताकूर्मव्याख्यात४संस्मृतदृष्टिपूर्वकं॥३५३॥पृथिव्याध्वनालाकादविह्विष्यनाध्वना॥३५४॥वैकुण्ठेक४युथि

म॥ आसलीनानि नानि साने पापयुक्तं ॥ ३०३ ॥ आसने दद्यात् राजमानयत्यमो न तन ॥ हे सर्मं विधिवदकावहं विधीयत ॥ ३०४ ॥ सुतं द्वि
 विहीनेन कृतायुजा शिवानवत ॥ विपनी गुरुलं दद्यादरुको युजनं तथा ॥ ३०५ ॥ सुतं द्वि विधाय र्थं ततः युष्माय यदसुन ॥ या धीकृ (नयुटिना) किमादी सः
 मूकनेन ॥ ३०६ ॥ यका नादिसु कानि नां विदु मसु कलं चिनात ॥ तदनु उ दन द्या समदं नु संपुन ॥ ३०७ ॥ तता ॥ दय नमा तानो नता ॥ मूयय दं वदत ॥ या धीकृ तिव
 दय धीकृ रुखा ॥ सुतं ॥ ३०८ ॥ अमूय जी वरु रुत ॥ सुतं ॥ मूयय दं तत ॥ सर्वं द्रिया धमूयाना वा ॥ अन ध्य दनं तत ॥ ३०९ ॥ अथ द्या धय द्या धा ॥ रुत ॥
 सुखी चिनी ॥ निष्ठ त्वनि वधू ॥ पूर्व यय मूयय दं वधू ॥ ३१० ॥ आ ध्या नि यया के वं धा धर्मं स मूक नेन ॥ वृक्ष विन स्य द्धु रु विना द्या धा सु दवता ॥ ३११ ॥ युधवा ॥
 गिव धूवी र्जं किनु कामना विरु ॥ निना वद द्धु क या द - द्या दि वि न्य सत ॥ ३१२ ॥ अमूय तिय द कान सा ध्यय दं मुचनेन ॥ विजु यत्ता धर्म स्य र्जं द्वा मं उ म्दा
 नधी ॥ ३१३ ॥ पूर्व यय धु नि का या ॥ युका न ॥ यनि का कि न ॥ तत सु धर्म स्य र्जं द्वा मं स मूक नेन ॥ मा रुका ना स कृ था द्या दि पूर्व कं ॥ ३१४ ॥ यलु द्वा मं वि ॥ ४८
 चंदवरा वय यदि न ॥ मयि र्वा स मूदि ॥ गय यं द्धु उ यत ॥ स न स नी स मा र्वा ता दवता मा रुका रि धा ॥ हल ॥ सु न ॥ ४८ स मा र्वा ना वी जानी स क
 य ॥ कुमा न ॥ ३१५ ॥ अ क्री व रु स दी धा न न नै य द्धु न के ॥ कुमा न ॥ अ रु का दि र्धं ली य य स ॥ ४८ स मा र्वा ता ॥ ४८ ॥ अ रु च त ल धा नै य कृ था र्जं लु य दि

३२

कं ॥ दि न सने व व श्री या का टिका रि ॥ समा दित ॥ ३१६ ॥ द्धु या दि र्धं वि न्य थ दं मं र्जं सु जा ति रि ॥ द्धु या य न मा र्वा ता नि स व कि व रु ता ॥ ३१७ ॥ नि नें वी र वा य व य
 मूकं क वी व य रु मी चिनी ॥ नै य या य वी य रु स्या द क या य रु ति कि मा न ॥ ३१८ ॥ जा त य ॥ ४८ कु मा द ता ॥ य र्जं ल य नि या ज य त ॥ य र्जं ल नि य स य न रु न रु म नू नू लु ज न
 ॥ ३१९ ॥ अ ग ही न स्य मं रु स्य र्जं नै वी ग नि के ल य त ॥ द्धु या य नि न द न रु त रु द व ॥ स वि रु द ॥ ३२० ॥ उ य न म न सा चै व द न न द्वि य र्जं य नी ॥ नि न ॥ ४८ द व ता या
 उ लु रु ना ॥ रि धा य के ॥ ३२१ ॥ स्या द ति वि र्ध य ॥ स द्वा द व ता या स म यि त ॥ नि र्वा का ति ॥ सु नू य र्जं व य उ यि त द्धु न ॥ ३२२ ॥ द व स्य या य क र्जं व क व रु ना रि धी
 यत ॥ रु मा दि या य र्जं न जा द व ता या ॥ यु का ध्य त ॥ ३२३ ॥ यो य रु दि त द वी क म सु धा य व वी नै ॥ अ नि रु स्य रु द नि रु द रु क न रु उ य त ॥ ३२४ ॥ इ ल व र्जं मं ग र्जं
 र्जं मं ग र्जं ना स क ना ति य ॥ क न य र्जं या स्य र्जं ॥ यु क न रि द न यि ॥ ३२५ ॥ य र्जं ल द व रु द म या नू स मा रु का क मा न ॥ क व ली मा रु का न स्य र्जं कि रु क ॥ य वि न्य सः
 ॥ ३२६ ॥ ना नै र्ध रि ॥ क ल रि रु ना रि रु स मा रु का क ना न ॥ ना ना या व र्जं स य का रु स या रु न मा ति का ॥ ३२७ ॥ ना न स्य र्जं व म द ह्य ॥ य र्जं ल द र्जं मं ॥ क ल ॥
 र्जं ॥ ४८ ॥ सु ति र्जं मं धा का ति र्जं कृ ध ति रि ॥ ४०० ॥ रि ति ॥ सि धि नि मा या को ॥ क व व र्जं क ली क मा न ॥ अ क ना द्धु क (धय) ना रु क ना मी क न य रु ता ॥ ४०१ ॥
 एता ॥ क न ध ना रु स र्जं व का रु य कृ ठि का ॥ उ ना व या लि नी र्जं नि नै ध नी न ति का मि र्जं ॥ ४०२ ॥ वे न द्वा द्वा दि नी या ति दी र्घा सु रु त व र्जं जा ॥ उ का ना दि

शी

ह्यायी०मनूवतविधिवनकेसिकामभगतरुक्कल्यविधानवाधितनरैर्विगतयमतन॥ततसूयायमंरस्यन्यासनृथादिको...
याफर्मशाधमीमना॥असामंरस्ययन्यासा१करुयासिद्धिमिद्वता॥५५॥जयतयेहहामात्रोसिद्धमंता१कताअधि॥अंगन्यासादिसि...
न्यासान्मसलान्सलदिविन्यास१कनीनन्यसनेयून॥ततमंरुदनन्यास१यदन्यासतत१यन॥५६॥ततकल्यवि...
होमागकायासविन्दके१५६०॥विन्यासमर्नयवित्तम्यक...सुदृष्टनवर्त्तनाअर्थयंगकनन्यासततामूडा१यदहयता॥५७॥...
नना॥आनमासद्वयवदनेमनसामर्न॥५७२॥तदयिदिविधिवकासमुर्णनिर्गुणतथा॥यज्ञाववका...
मितिददविदविद॥आसनाददयाराजकानिकाकुसुनाचिनी॥५७३॥यज्ञसामसूयाभिर्मंरुलेनविनाजिनी॥...
नुर्वयददनकदिस...नाआनमयत॥आवागीतय...न्यासमा...नेनेलेविता॥५७४॥तस्मिन्...
जनानिके१॥५७५॥राजनावसुनवातवेधदवसमाचनेन॥मूलाधनतकुंठदवतामिसुमकल॥५७६॥धर्मधर्मा...
हयिष्यकेशकयान्धी१॥५७७॥अहता...न्यासकोधदिकैरुवि१॥मनचवसुव१याकै१सूयमा...
हयिष्यकेशकयान्धी१॥५७७॥अहता...न्यासकोधदिकैरुवि१॥मनचवसुव१याकै१सूयमा...

हवनैवधे१॥अत्रिनेधनवधनमधमानमाहाधकानयनियंथिनिसंविदो...
विका...
१॥धर्मधर्मसमदीकआत्मा...मनसासुवा॥१०५॥सूयमाव...नानिह्यमकवृत्त...
येनिवदयत॥गुणानिगुण...
ततसूदवतोनुय...
कथनधना॥१०२॥आत्मा...
किदि...
धयेत्तुधी१॥अंअर्कमठलायतिअमनादिव...
कुंसांममंठलायतिअहयुगकलासन॥नमार्कमंठला...
॥तीर्थमंरुहविधिवतर्मरुहरेवकथन॥गंनवयमन...

निसनसुति॥११४॥ अंगन्यासनसकलीकृत्यामुहादिर्दिद॥ कीलयनुरुमंघनिनीरुर्गंखमुडया॥११५॥ अवसुखततादीयामुडयायानिसंयया॥ गंधयुयाः
 दिरिसुखयुजयदियदवती॥११६॥ अशुक्रवाजयनूलमावायमस्यमुडया॥ तज्जलीयाकधीयारकृतात्मानंविवात॥११७॥ आसतवासननमाविशतवात
 म॥ शिवतवात्मननमंयुगेमंयुगिहिसुत॥११८॥ योऽस्ययुयादकीवायिमंउलीविधिवसुधी॥ तत॥ संयुजयदहं गंधायमूलमंवनन॥११९॥ यंरकले॥ यन
 कृयातयुयाजलिमनन्यधी॥ उरुमांगदकोधनयादसर्वांगकोकमात॥१२०॥ ततोधुयादिकंदलावेखदवसेमावनत॥ साधिवेगेनकथोदेवतादुदिकेन
 ॥१२१॥ ततोऽनुरूपीकृतावाकयी॥ युयुजयत॥ अदीलिखयंयनाडेतरुकात्याकडयादिविलिखयंयमूलमी॥१२२॥ सोवाधनाजततामयी॥ यज्जयदवति॥
 विनायंरुखवत्युजादवतानयसीदति॥१२३॥ यो० न्यासविधानेनयी० संयुजयुवेवत॥ याद्यायावमनायंरुमधुयकोथमयथा॥ याद्याध्याधनयुकातिरुधाः
 दिनवितानिव॥ साययत्युनतसानियूनयद्यासुवलेना॥१२४॥ यादुधमिकद्वोडविष्कृतीनाजलसुत॥ अर्चयुयादिकंदीकालेवर्गसजलविद॥१२५॥
 आशुदधिमधुनिर्धमधुयकेसमीनित॥ एकस्मिन्नथवायाययाद्यादीनियकल्ययत॥१२६॥ सद्योयवानवसुनामरावहावयद्विया॥ एवमासाययुयावर्ग
 यो० निधायव॥१२७॥ मूलनमूलिसंयुजध्यावादेवयथादिता॥ आवाकयुजयनस्यायनिवातगले॥ सतयुमेसावनननावाहनविसुजने॥ अलर्ग

X कनमूडया॥ संकलीकंनमूडयायनसीकनध्यायनसीकृत्यासाधक॥ अथायवनानकृतीतमं५

जिलादीदिदव॥ सानिदिताकुर्व॥१२८॥ कदयात्रिगंनडादीयानंयथा॥ सुयुमावर्तनादवेनारिकावंधनिर्गती॥१२९॥ कनस्यमाकंरुजनिहानदसुधादय
 ॥ मूलमंयसमूवायेसांगंसाधदेवती॥ एकहीतिमद्वसुयादकात्यादयानिध॥ आसनं कल्ययामीदमासागीयद्रमुडया॥१३०॥ कल्यतवीसनविज्ञनवीवाकाः
 न्याधमुडयाआवाकृतायथसम्यकसंसायनायमुडया॥१३१॥ समूवीकननायायध्यासकलीकृत्यासाधकं॥ सकलीकनध्यायध्यादुवर्ग० नमूडया॥१३२॥ अ
 र्गुमासुतीकृताः मृतावित्वागतादिकोन॥ सागलंकृतलयधंरुवायुयाजलित॥१३३॥ मूलानसायुध्यादिसर्वोत्तमनरुगवनयदा॥ गंधेवालेखदवसुनामंतादय
 दीनयत॥१३४॥ ततोयद्येयदव्यायुयेतकल्यकयामिव॥ उक्तोतदंरुदयंयाद्यमंयायसोनित॥१३५॥ याद्यंयादीवुजदयादेनजसुननात॥ उपेधानमिमं
 र्गदयामियनमध्वनि॥१३६॥ मूलानसायुध्यादिहाकृकमननाः मृना॥ दद्यात्युयाजलितमेयाधीतसाधकानम॥१३७॥ याद्यस्यानंवेद्यंननिसानदि० व
 दत॥ तदामंयातनंननसिन्नयद्येतिविदि॥१३८॥ तत॥ युयाजलिदद्यात्युयाजलिमनेनासुधी॥ अर्घंनदंयनिष्कृतिविद्वानाचमंनेवदत॥१३९॥ साहासा
 सध्वयुयादतनाचमनंमुख॥ पुन॥ युयाजलिदद्यात्वाध्यायवेमनेयदं॥१४०॥ मधुयर्कयुयुजोतदद्याददनवध॥ युयाजलिद्विधाकथंयद्योदोचमनेव
 ध॥ तनेवमननागदद्यात्युयाजलिनत॥ यादुकेयनिध्यायधरुगवननननिर्मित॥१४१॥ सानमंउयमायाहिसानायात्रिहादिनागी॥ याद्येवित्वायुयद्वतः

ॐ

[illegible]

12

५ धूपार्थं प्रतिगृह्यतां ॥ ५५ ॥ ६ धूपार्थं यद्वैवातनासर्वास्त्रादिनिमित्तं ॥ ५६ ॥ ७ धूपार्थं यद्वैवातनासर्वास्त्रादिनिमित्तं ॥ ५७ ॥ ८ धूपार्थं यद्वैवातनासर्वास्त्रादिनिमित्तं ॥ ५८ ॥ ९ धूपार्थं यद्वैवातनासर्वास्त्रादिनिमित्तं ॥ ५९ ॥ १० धूपार्थं यद्वैवातनासर्वास्त्रादिनिमित्तं ॥ ६० ॥

दिवागंधागंधनूहम॥आधुय॥सर्वरुतानांलोयद्राकुनीधुत॥१५१॥सानीमानविनिक्षिपुगुगुलुगुनवृक्षज॥नियामादुस्थितेद्वेगंधद्वेयथादि
 त॥१५२॥अनन्यापितधूयार्यं॥स्यन॥त्रैनेकमेति॥वेत्ताकयूवगर्हिस्थासायैषातिलजनवा॥१५३॥आनायदनेयदीयानूत्रे॥सोनरुधालिन॥सूयकसामहादी
 य॥सर्वरुतिमिनायद॥१५४॥सवाक्रायांनर्धातिदीया॥र्ययतिगृध्रता॥दीयाश्चिधूयवत्याययमांकावनिनिर्मित॥१५५॥यतिपर्ययदियसुवर्णागवा
 वृष्टताकया॥अन्यानिनदिन॥यूजाकालनर्वय॥स्यन॥१५६॥अथचैर्वदुतस्यासृगृहावृमिनिपूजयतयाय॥यथमतस्तुष्टाविदवान्नाथरुवेत॥१५७॥
 दवतायाध्वरिमुख्यंआनर्यंदादिकस्ययतकसनेष्टमिकाधदिदद्यादिययूजयत॥१५८॥नरुमेष्टादिद्वान्नुर्मर्तुर्नर्मातके॥तुमानरुटिकेष्टमेष्टील
 रुष्टानुष्टाविष्ट॥१५९॥वनदारुयध्वनिष्ट॥यध्वनननव॥रुय॥आतयावेद्वानेनकुमनेवांगदवता॥कालविष्टानत॥याष्टेमादायसुमनावर्न
 रीष्टसिद्धिमदहिष्टनष्टगनवसुत॥१६०॥रुक्तासमर्थयतुष्टमायमाननष्टार्चन॥रुष्टव्ययक्षियष्टवनासुद्धिसाधक॥१६१॥यष्टाद्वर्तवृष्टक्यादि
 यमावनष्टार्चन॥यष्टाद्वर्तनीया॥सू॥कष्टाकाष्टुष्टयकुमात॥१६२॥नगाजंयेष्टाक्यालान्मूलयाविष्टदानितान्यष्टाधीष्टनवर्गष्टयनिवानीगर्
 तां॥१६३॥रुष्टावर्क्षियमानकाववृष्टचवताविष्ट॥रुष्टान॥कमलाष्टा॥यष्टउष्टयितासद॥ननावतस्तुष्टमष्टाष्टिष्टयतसंरुक्त॥सकनाष्टा

५६

[illegible]

27

लाविताया ॥५२४॥ सुतारुवरयध्वसिद्युजितासिधूरंकनि ॥ त्वमेवासिठगथकागुधतातधनानिनि ॥५२५॥ सुतारुवोद्धितीदविददासिकनुधकन ॥ यनमानं
दवाध्वान्निधुयनजस्रनुयिनि ॥५२६॥ त्वदज्ञानऊगहानिब्रह्माज्ञानादिनिवर्त्तित ॥ द्विद्विर्धर्ममहासनामायमाणनमासुत ॥ सुद्विद्विधुयसंज्ञानदुख
सनातनि ॥ त्वमेवासिठगथकागुधतातधनानिनि ॥५२७॥ गुधगयात्मिकासिध्वंजगतकन(धनुया ॥ अन्नुगदायरुकातीगृहितदिव्यविग्रह ॥५२८॥ रु
कस्यमनिययूजायूकस्ययनमध्वनिनेहिकामयिकौसिद्धिदहृदिदधनंदिनि ॥५२९॥ तावयगुययत्रिमानवदनैगाहिमायरा ॥ नानावैमिनध्वमि
नविनयामिनान्यसनामिनरुजामिनवाधयामि ॥५३०॥ त्वकूतदीयवनध्वंजमादननामीयादिरुतकययामयिददिसिद्धि ॥ अज्ञानाद्युमादादाव
कल्यात्ताधकस्यगु ॥५३१॥ यन्मूनमतिनिर्किंचतत्सर्वध्वंमहसि ॥ दवाहीनकोयाहीनं ध्वमंगविबोद्धिती ॥५३२॥ तत्सर्वकययादविद्वमसत्वंदयानि
(ध ॥ यत्तयाक्रियतकर्मजायत्तयसुसुयिषू ॥५३३॥ तत्सर्वतावकीयूजास्यारुध्वमयरा ॥ यन्मक्रियायतकर्मजायत्तयमववा ॥५३४॥ तत्सर्ववृज
गह्वादिर्ध्वमयमंजलि ॥ अन्नवदतां सुत्वातकद्ववसुवनवा ॥५३५॥ येषांजलिंयूनदत्तासाक्षीगुणमन्मू ॥ यूनयुदाक्षीकलमन्मूकोवयसंद
नत ॥५३६॥ यनिवाचगर्धसर्वमूयसंज्ञानमूदया ॥ कमसंनिवदन्मूलमंगधवायकीरित ॥५३७॥ विधायदवतीयध्वस्त्रीयदत्तनसीनरु ॥ सप्रवावर्मनाः

पुरश्चर्य दीक्षा

आर्य समाज

1.618

ARCHIVES



ASMA ARCHIVES
PREFACE
168